बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-83 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसंबर 2019 से जनवरी 2020 | मूल्य - 5 रूपए

ठंड में खुले आसमान के नीचे रात गुजारने को मजबूर हैं बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

गांवों व शहरों में पड़ रही कड़ाके की ठंड ने लोगों का जीना मुश्किल कर रखा है। जहां एक ओर दिल्ली के बढ़ते प्रदूषण ने आम जनजीवन अस्त व्यस्त कर रखा है, वहीं बर्फीली सर्द हवाओं ने ठिठुरन को दोगुना बढ़ा दिया है। इस जबरदस्त ठंड के चलते सड़कों, फुटपाथों व स्टेशनों पर गुजर-बसर कर रहे बच्चों का हाल बहुत बुरा है। उनकी इन्हीं हालातों का जायजा लिया बालकनामा के पत्रकारों ने। इन सभी सदस्यों ने राजधानी दिल्ली के पश्चिमी व दक्षिणी इलाकों, नोएडा, आगरा लखनऊ और गुरूग्राम का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की। बातचीत के दौरान पत्रकारों ने यह जानने का प्रयास किया कि ये बच्चे इस कड़ाके की ठंड में अपना जीवन कैसे व्यतीत कर रहे हैं। 15 वर्षीय शालू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बच्चे फ्लाई ओवर के नीचे रहते हैं। हम रैन बसेरे में नहीं रहते, क्योंकि रैन बसेरे हम बच्चों के लिए हैं ही नहीं; पर उसमें परिवार रह सकते हैं।

बच्चों ने बताया कि खुद को ठंड से बचाने के लिए हम तिरपाल और बोरी का सहारा लेते हैं। हमारे पास यहां आग जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं होती। हमें लकड़ी खरीदनी पड़ती है और लकड़ी बहुत मंहगी है, इसलिए हम आग भी नहीं जला सकते। कुछ बच्चों ने बताया कि हमें खुद को ठंड से बचाने के लिये मजबूरन एक छोटे से कंबल में छह से सात बच्चों को एक साथ सोना पड़ता है। इसके अलावा चौंका देने वाली बात सामने आई कि छोटे-छोटे बच्चे, जो लगभग 7 या 8 साल की उम्र तक के होते हैं, जब उन्हें ठंड लगती है, तो वह दूसरे बड़े लोगों के कंबल में घुसकर सो जाते हैं; पर इस दौरान बच्चे यौन शोषण का शिकार हो रहे हैं। यद्यपि उनका शोषण किया जा रहा है, फिर भी वे ठंड से बचने के लिए ट्रक के नीचे सो जाते हैं, जिससे इंजन की गरमाहट होने के कारण उन्हें ठंड से थोड़ी राहत मिल जाती है। इसके अलावा बच्चे अपनी ठंड भगाने के लिए पूरे दिन लकड़ी बीनते हैं और रात होने पर उन लकड़ियों से आग जलाकर उसी के किनारे बैठ जाते हैं। ठंड को दूर करने के लिए ज्यादा नशा करते हैं, जिससे हमें ठंड महसूस ही नहीं होती। ठंड को दूर भगाने के लिए जहां कुत्ते सो रहे होते है, उन्हीं के साथ वो बच्चे भी सो जाते हैं। इस बीच कुछ ऐसे बच्चे भी पत्रकार के संपर्क में आये, जो बच्चे रात में अपने खुद के कपड़े जलाकर ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी थे, जो कार के नीचे सो जाते हैं; क्योंकि कार का इंजन गरम होता है। उन्होंने बताया कि जिस दिन भी ज्यादा ठंड लगती है, उस दिन वे अपने कपड़े जलाकार आग का प्रबंध करते हैं। वह इसी प्रकार अपनी पूरी रात गुजारते हैं। इसके साथ ही कुछ बच्चों ने बताया कि वह ठंड से बचने के लिए सड़क पर तिरपाल डालकर रहते हैं। 16 साल की बालिका ने बताया कि हमारे पास गर्म वस्त्र नहीं हैं, जिससे हम ठंड से बचाव कर सकें; इसलिए हम लड़कियां नशे का सेवन करती हैं, जिससे हमें ठंड महसूस नहीं होती। पत्रकार ने जब आगरा क्षेत्र में रहने वाले बच्चों से बातचीत की, तो मालूम हुआ कि आगरा में स्टेशन पर काम कर रहे बच्चे ठंड से बचने के लिए मैनटस की गोलियां, नशे की दवाईयां लेते हैं और नशीले इंजेक्शन भी लगाते हैं।

श्री संजय गुप्ता की राष्ट्रपति से भेंट

बालकनामा ब्यूरो

3 जनवरी 2020 को नई साल की शुरूआत में ही सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए अभूतपूर्व काम करने वाली सामाजिक संस्था चेतना को राष्ट्रपति द्वारा भूरी-भूरी प्रशंसा मिली। देशभर के 60 सामाजिक प्रतिनिधियों को देश के राष्ट्रपति से मुलाकात करने का अवसर मिला था, जिसमें दिल्ली की चेतना संस्था भी एक रही। इस अवसर पर व्यक्तिगत मुलाकात में श्री संजय गुप्ता ने महामहिम को सड़क व कामकाजी बच्चों से जुडी समस्याओं और उनके लिए संस्था द्वारा किए गई कार्यों को बताया। उन्होंने बताया कि कैसे जनगणना के सन्दर्भ में सड़क व कामकाजी बच्चे पीछे है और स्कूलों में इन बच्चों के लिए और सुविधाओं की जरुरत है। इस अवसर पर श्री गुप्ता ने राष्ट्रपति से संयुक्त राष्ट्र के जनरल कमेंट को अपनाने का भी अनुरोध किया। बच्चों द्वारा बनाया गया एक बड़ा ग्रीटिंग कार्ड दिया और साथ ही बालकनामा की एक प्रति भी दी। राष्ट्रपति ने संस्था के कार्यों को सराहा और पुनः मिलने का आश्वासन दिया।

इंटरनेशनल कोर्ट के जस्टिस दलवीर भंडारी को बालकनामा के रिपोर्टर बालकनामा की प्रतियां भेंट करते हुए। साथ में चेतना के निदेशक श्री संजय गुप्ता।

नन्हें कन्धों पर घर की जिम्मेदारी

रिपोर्टरः आंचल

मड़ियांव सम्पर्क बिंदु पर एक बच्चा, जिसका नाम किशन है, वह लगभग 6 साल का है। वह अनपी मम्मी के साथ प्रतिदिन सब्जी मंडी में काम करने जाता है और जो-कुछ सब्जियां गाड़ियों में से गिर जाती हैं, उन सब्जियों को किशन इकट्ठा करके आसपास की गलियों में

शेष पृष्ठ 7 पर

प्रदूषित गोमती नदी से बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा बुरा प्रभाव

रिपोर्टरः आंचल

गोमती नदी के किनारे रहने वाले परिवारों के बच्चे नदी के किनारे खेलने-कूदने जाया करते हैं। कभी-कभी वह बच्चे गोमती नदी में नहाने के लिए भी वहां जाते हैं। वहीं गोमती नदी के पास ही कूड़ा-कबाड़ा पड़ा रहता है, साथ ही कुछ मवेशी वहां घूमते-फिरते हैं, जिसकी वजह से नदी के आस-पास का हिस्सा बेहद प्रदूषित रहने लगा है। इस समस्या के करण बच्चे बीमार भी पड़ने लगे हैं।

जब बालकनामा के पत्रकारों ने वहां रहने वाले बच्चों से बातचीत की, तो उन्होंने बताया कि हम गोमती नदी के आसपास रहते हैं और जब से गोमती नदी में प्रदूषण होने लगा है; यहां रहने वाले बच्चे अधिकतर बीमार पड़ रहे हैं। साथ ही साथ उन्होंने यह भी बताया कि गोमती नदी प्रदूषित होने का कारण यह भी हो सकता है कि जो लोग अक्सर यहां घूमने-फिरने के लिए आते-जाते है, वह लोग अपने साथ खाने-पीने का सामान लाते हैं, तो उसका जो अपशिष्ट पदार्थ होता है,

वह गोमती नदी के पास ही फैंक देते हैं, उसे कूड़ेदान में नहीं डालते हैं। इस वजह से गोमती नदी में प्रदूषण ज्यादा मात्रा में हो रहा है, इसकी वजह से इसके किनारे रहने वाले छोटे-छोटे बच्चे ज्यादातर बीमार पड़ रहे हैं। इसके अलावा (परिवर्तित नाम) 14 वर्षीय पायल ने बताया कि यहां साफ-सफाई भी नहीं की जाती, ताकि यहां दूषित पदार्थों से छुटकारा मिल सके।

संपादकीय

हैप्पी क्रिसमस। अलविदा 2019। अलविदा 2019 कहते हुए ''बालकनामा'' का यह 83वाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है कि हम एक लंबी यात्रा तय करते हुए वर्ष 2020 में प्रवेश करने की दहलीज पर खड़े हैं। हमें गर्व है अपनी संपादकीय टीम, बाल रिपोर्टर्स, बालसाथियों पर, जो बहुत ही कम शिक्षा की पृष्ठभूमि, सड़कों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने और अल्प संसाधनों के बावजूद अपना अखबार निकाल रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली सहित देश के लगभग सभी महानगरों, नगरों में अति गरीबी और पारिवारिक संरक्षण, सुविधाओं से वंचित तथा उपेक्षित बच्चे सड़कों पर गुजर-बसर कर रहे हैं, जो शहर के प्रमुख स्थानों पर भीख मांगते, पन्नी बीनते, स्टेशन और चैराहों पर बोतल और कबाड़ा बीनते ढ़ाबों पर काम करते बच्चे हैं। इनके परिवार भी इन्हीं कामों में लगे हैं जो खुले में रात गुजारने को मजबूर हैं। अफसोस जनक है कि स्कूल जाते समय मासूमों के साथ होने वाली छेड़छाड़, माता-पिता की उपेक्षा, काम के स्थान पर अत्याचार, बड़े-नशेड़ियों का दुर्व्यवहार, की वजह से ये बच्चे शिक्षा से भी दूर होते जा रहे हैं। अपने आप को असुरक्षित महसूस करते हैं। स्कूल तो ज्ञान का पवित्र मंदिर होता है। लेकिन मासूमों के साथ जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर तो यही कहा जा सकता है कि मासूम स्कूल के आसपास भी असुरक्षित हैं। ''बालकनामा'' टीम इन मासूमों की समस्याएं समाज और सरकार तक पहुंचाने तथा इनके अधिकारों की आवाज उठाने के लिए दृढ़संकल्प हैं। इन घटनाओं को पढ़-जान कर आपके मन में भी कई सवाल उठ रहे होंगे। आपको भी इन मासूमों की चिंता सताने लगी होगी। आप अपने मन की बात, विचार, सुझाव पत्र, ईमेल के माध्यम से संपादकीय टीम तक पहुंचा सकते हैं। आशा है आपका सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन हमें पूर्ववत मिलता रहेगा। हमें उम्मीद और विश्वास है कि आने वाले समय में हमारी टीम अपने काम को 2020 वर्ष में और भी अधिक गरमजोशी से करेगी।

बालकनामा टीम

छोटे बच्चों से करवाया जा रहा है, मादक द्रव्यों का व्यापार

रिपोर्टरः संगीता

बालकनामा पत्रकारों ने लखनऊ की एक झुग्गी-झोपड़ी बस्ती का दौरा किया, जहां पाया कि बड़ी संख्या में बच्चे मादक द्रव्यों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। यहां रहने वाले लोगों के पास जब काम-धंधा नहीं रहता है, तो यह लोग मादक द्रव्य बेचने का व्यापार करते हैं, तथा यहां पर सभी नशा भी करते हैं। इनकी देखा देखी बच्चे भी इस नशे की चपेट में आ रहे हैं। इनमें लगभग 6 बच्चे, जिनकी उम्र 8/9 साल तक की ही है; मादक द्रव्यों को बेचने का काम कर रहे हैं। इन बच्चों के अनुसार, विक्रेता हम बच्चों से मादक द्रव्यों को बेचने का व्यापार करवा रहे हैं। विक्रेता इन छोटे बच्चो को मादक द्रव्यों की कुछ कागज की पुड़ियां बनाकर बेचने के लिए देता है और बच्चे इस नशे की पुड़ियों को औरतों एवं पुरूषों को बेचते हैं। इनमें से कुछ औरतें और पुरुष बच्चो ं के पास स्वयं मादक-द्रव्य खरीदने आ जाते हैं। इस तरह बच्चों का भविष्य

आपराधिक गतिविधियों की ओर बढ़ता जा रहा है। विचारणीय विषय यह है कि कैसे यह दुष्ट व्यक्ति पैसों का लालच देकर बच्चों से यह खतरनाक काम करवा रहे हैं? बच्चे इस काम को करने की वजह से गलत दिशा में जा रहें हैं और शिक्षा से वंचित होते जा रहे हैं। यदि ऐसा ही होता रहा तो इन बच्चों का भविष्य जल्द ही बर्बाद हो जाएगा।

मवेशी एवं कुत्तों से भयभीत बच्चे

रिपोर्टरः संगीता

हमारे पत्रकारों के माध्यम से जानकारी मिली है कि जो बच्चे चारबाग रेलवे स्टेशन (लखनऊ) के आस-पास रहते हैं, वह बच्चे असल में खुली जगह में रहकर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। उनके पास रहने को घर नहीं और सोने को अच्छा बिस्तर नहीं है, पर फिर भी, यह बच्चे खुशी-खुशी अपने माता-पिता या दोस्तों के साथ रहते हैं। लेकिन जब पत्रकार इन बच्चों से मिली तो यह बच्चे बेहद परेशान थे।

पत्रकार के पूछने पर पता चला कि जिस जगह बच्चे खुले में सोते हैं, तो वहां अब मवेशी, कुत्ते और बड़े-बड़े ढ़ेर सारे चूहे सोते समय निकलते हैं,

तो बच्चों को काट लेते हैं। अभी हाल ही में कुछ बच्चों को सोते समय कुत्तों ने काट लिया एवं चूहे, जो जमीन के अंदर से निकलकर आते हैं उनसे भी बच्चे बेहद परेशान हो रहे हैं। चूहों ने भी काट-काट कर बच्चों को जख्मी किया हुआ है। इस वजह से बच्चे बहु-त परेशान हैं और बेहद डरे हुए हैं। रात को ज्यादा ठंड होने की वजह से हम बच्चों को पता नहीं चलता कि चूहे ने हमें काट खाया है, पर जब सुबह उठते हैं, तो हमें शरीर पर चूहे के काटे हुए जख्म दिखते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि हमें इन सभी परेशानियों से मुक्ती मिले और समस्या का समाधान हो; क्योंकि चूहों और मवेशियों के डर से हम बच्चे सो नहीं पाते हैं।

क्या आप बनेंगे सहयोगी?

बातूनी रिपोर्टरः काजल व रिपोर्टरः शम्भू

हमारे पत्रकार को विजिट के दौरान स्कूल जाने वाले बच्चों की एक गंभीर समस्या की जानकारी मिली। वह यह कि जिन बच्चों के माता-पिता पहले से ही कामकाज करते थे, अपने बच्चों की जिंदगी भी कामकाज में झोंक रहे थे। सामाजिक संस्था के सहयोग से इन बच्चों का स्कूल में किसी तरह दाखिला हो गया। बच्चे पूरी लगन के साथ रोज स्कूल में पढ़ने जा रहे थे, एवं इनके माता-पिता भी बच्चों को रोजाना स्कूल भेजने लगे थे। लेकिन वर्तमान में जब पत्रकार ने इन बच्चों से मुलाकात की तो एक बात सुनने को मिली, जिसकी वजह से काफी बच्चे परेशान हैं। आईए इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करें कि आखिर ऐसा क्या हुआ जिसकी वजह से बच्चे फिर से परेशान हैं? 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मोनिका ने अपने बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि पहले हमारा स्कूल में दाखिला सामाजिक संस्था के द्वारा कराया गया था, तब से हम बच्चे प्रतिदिन स्कूल जाने लगे थे और वर्तमान में हम बच्चों ने पांचवीं कक्षा पास करके छठी कक्षा में प्रवेश कर लिया है लेकिन दुख की बात यह है कि जिस स्थान पर हम बच्चे रह रहे हैं, वहां सिर्फ पांचवीं तक ही स्कूल है। पांचवीं पास करने के बाद छलेरा गांव भेजा जाता है। जो हमारी बस्ती से काफी दूर है, जिसकी वजह से अन्य बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने और स्कूल जाने में काफी परेशानी हो रही है। क्योंकि अब स्कूल तक पहुंचने के लिए वाहन की सहायता लेनी पड़ती है और हमारे माता-पिता इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हो रहे हैं। बच्चों नें बताया कि जब भी हमें स्कूल जाने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है। तो हमारे माता-पिता स्कूल जाने के लिए हमें किराया नहीं देते हैं। क्योंकि प्रतिदिन केवल स्कूल जाने के लिए 50 रूपया आने-जाने का किराया खर्चा होता है। इसके लिए माता-पिता हमें हर रोज 50 रूपया देने के लिए तैयार नहीं हैं। इतने पैसे हमारे परिवार वालों के लिए देना मुश्किल पड़ रहा है। बच्चों का कहना है कि हमारे घर के निकट से नगर निगम की बस निकलती है लेकिन बस ड्राइवर जैसे ही हम विद्यार्थियों को देखते हैं, वैसे ही बस नहीं रोकते हैं। बस की रफ़्तार तेज कर बस तेजी से निकाल लेते हैं जिसकी वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है। पैदल जाने में हमें काफी समय लगता है और ऐसे में हमें दुघर्टना होने की भी संभावना रहती है तथा स्कूल जाने में देरी हो जाती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि आप लोग इस खबर को पढ़ें और हमारी मदद करें, ताकि हम शिक्षा से दूर न हों और रोज स्कूल जा सकें।

मजबूरी या शिक्षा का अभाव

बातूनी रिपोर्टरः गोरी व रिपोर्टरः किशन, नोएडा

चलिए जानते हैं कि बच्चे खुद अपना पालन-पोषण कैसे कर रहे हैं? बच्चे आखिर कचरे के डिब्बो में से खाना निकालकर क्यों खाते हैं? हमारे पत्रकार से बात करते वक्त बच्चों ने बताया कि पूर्वी दिल्ली में ऐसे ज्यादातर बच्चे हैं, जो कूड़ेदान में से खाना निकालकर खाते हैं। यह कूडेदान वह हैं, जो सड़कों पर सार्वजनिक लोगों के लिए होते हैं। लोग अपना बचा हुआ दाल, रोटी, चॉकलेट, बिस्कुट या अन्य प्रकार के फास्ट-फूड इन कूड़ेदान में फेंक देते हैं। उसके बाद बच्चे वही खाना कूड़ेदान में से निकालकर खाते हैं। जब इन बच्चों को कूड़ेदान में से कुछ भी खाने के लिए नहीं मिलता है, तो बच्चे अपना पेट भरने के लिए भीख मांगने का काम करते हैं। कई बार इन्हें इससे भी कुछ पैसे नहीं मिलते हैं और सिर्फ लोगों की गालियां और दुत्कार मिलती हैं। इस बात पर बच्चों ने बहुत दुख जताया। इनके माता-पिता भी इन बच्चों के खाने-पीने का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखते हैं। वह खुद नशे में धुत रहते हैं और अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इन बच्चों से आम व्यक्ति, चलने-फिरने वाले लोग घृणा करते हैं तथा इन्हें दुत्कारते हैं और इनके साथ गाली-गलोल करते हैं। इस वजह से बच्चे अपना दुख किसी के साथ बांट नहीं पाते हैं। धीरे-धीरे यह बच्चे नशे की ओर बढ़ने लगते हैं। इनमें से कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो नशे की ओर बढ़ चुके हैं तथा वह दूसरे बच्चों को भी इस नशे में लाने की कोशिश करते हैं। पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं। ऐसे बच्चे चोरी-चकारी जैसे कामों के अलावा जेब काटना भी सीख रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

हमें भय है कि पुनः उस परेशानी में न उलझना पड़े

बातूनी रिपोर्टर: अंजली व रिपोर्टर: शम्भू

हमारे पत्रकार को भ्रमण के दौरान पता चला कि नोएडा में बसी एक बस्ती, जहां लोग पांच साल से झुग्गी-झोपडी बना कर रह रहे हैं। यह लोग अपने परिवार के गुजारे के लिए कूड़ा-कबाड़ा की बिनाई-छांटाई के काम कर रहे हैं। यह लोग बंगाल के रहने वाले हैं। उनके गांव में कमाने-खाने का कोई जरिया नहीं था, इसलिए यह लोग नोएडा आए और कामकाज की तलाश करके गुजारा करने लगे हैं। दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद रात को चैन की नींद ले पाते हैं; इस बस्ती में रहने वाले लोग। लेकिन इस स्थान पर एक बड़ी समस्या पैदा हो गई है कि ये लोग जिस स्थान पर झुग्गी बनाकर रह रहे थे, उस स्थान पर एक भी शौचालय नही था। बस्ती निवासी व बच्चे खुले में शौच करने के लिए जाते थे, तब कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। सबसे ज्यादा परेशानी लड़कियों को हो रही थी, तभी बस्ती निवासियों ने इस विषय पर गंभीरता से बातचीत की और बस्ती के निकट एक नाला है। उसके पास कपड़े व तिरपाल के द्वारा शौचालय बनाया और उसी शौचालय का प्रयोग करने लगे। लेकिन वर्तमान में यह पता चला कि वह कपड़े और तिरपाल से बने हुए शौचालय तोड़ दिये गये हैं और बच्चे और उनके माता-पिता से यह कहा गया है कि हम आपकी बस्ती में नए, अच्छे वाले शौचालय बनाए जाएंगे। लेकिन अभी तक कोई अता-पता नहीं है। बच्चे और माता-पिता फिर से खुले में शौच करने के लिए जाने लगे हैं। बच्चों का कहना है कि उन्होंने कपड़ा और तिरपाल से बने हुए शौचालय तोड़ दिये, ऐसा नही करना चाहिए था। पहले हमारी बस्ती में शौचालय बनाकर देते, फिर हमारे शौचालय को तोड़ते, तब हमें कोई परेशानी नहीं होती। अब हमें शौच के लिए दर-दर भटकना पड़ता है। सबसे ज्यादा परेशानी महिलायों और बच्चियों को हो रही है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि जल्द से जल्द हमें इस परेशानी से निजात दिलाई जाए, नहीं तो हम पहले की तरह ही शौचालय बनाने को मजबूर होंगे।

शौचालय न होने से बच्चों को करना पड़ रहा है कई दिक्कतों का सामना

रिपोर्टर : संगीता

लखनऊ में बसी एक बस्ती लवकुश नगर। पत्रकार संगीता ने इस बस्ती के बच्चों के साथ बातचीत की तो उन्हों ने बताया कि लवकुश नगर में सार्वजनिक शौचालयों की सुविधा नहीं है। शौचालय के लिए बच्चों को बहुत दूर तक जाना पड़ता है। शौचालय की सुविधा बच्चों को मिलती तो है, पर बहुत दूर। जब बच्चों को शौच के लिए जाना पड़ता है, तो बच्चे सड़क पार करके शौच के लिए जाते हैं। इस दौरान कई बार बच्चों के साथ दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है। जब भी बच्चे सड़क पार करते हैं तो रोड पर वाहन नहीं रुकता। उस रोड पर बहुत तेजी से वाहन आते हैं और जाते हैं। इस वजह से बच्चे कई बार दुर्घटना का शिकार होते-होते बाल-बाल बचे हैं। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) जूही का कहना है, यदि हम बाहर खुले में शौच करते हैं, तो हमें दुष्ट व्यक्ति अश्लीलता से छिपकर देखते हैं। हम मजबूर हैं खुले में शौच करने के लिए; क्योंकि हमारे घर के आसपास शौचालय की सुविधा

नहीं है। हम बच्चे चाहते है कि हमारे यहां पास में ही शौचालय की सुविधा हो। पास में शौचालय होने पर हमें शौच करने के लिए न तो खुले में जाना पडेगा और न ही रोड़ पार करना पड़ेगा; और हम किसी दुर्घटना का शिकार होने से भी बचे रहेंगे।

कठिनाईयों से इस प्रकार जूझते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: आकाश व रिपोर्टर: शम्भू

बढ़ते कदम के बाल साथियों ने सपोर्टर ग्रुप मीटिंग की, जिसमें बढ़ते कदम के सभी बाल साथियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, और हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकरी देते हुए कहा कि भईया आप सभी तो जानते हो कि हम सभी लोग बंगाल के रहने वाले हैं और हमारे माता-पिता इस स्थान पर कामकाज के लिए आए हैं। क्योंकि हमारे बंगाल में कामकाज की कोई सुविधा नहीं है। इसलिए हमारे माता-पिता इस स्थान पर आकर रह रहे हैं, ताकि कामकाज मिल सके और हम अपना गुजारा कर सकें। लेकिन इस स्थान पर भी आने के बाद हम बच्चों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा है। जैसे कि पहले हमारे माता-पिता कामकाज के लिए दर-दर भटक रहे थे। क्योंकि ज्यादातर लोग काम पर रखने के लिए आई डी प्रूफ मांगते थे। हमारे माता-पिता में से कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिनके पास आई डी प्रूफ बंगाल के हैं, जिन पर बंगाली भाषा में लिखा हुआ है, जिससे हमारे माता-पिता को कामकाज पर रखने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे; और दूसरी बात यह है कि वर्तमान में जैसे-तैसे करके हमारे माता-पिता कामकाज कर रहे हैं लेकिन हम बच्चों को काफी परेशानी हो रही है; क्योंकि हमारे माता-पिता सुबह ही कामकाज के लिए चले जाते हैं। इसलिए घरेलू कामकाज हम बच्चों को ही करना पड़ता है। जैसे कि छोटे भाई-बहन की देखरेख करना व भोजन बनाना।

बच्चों का कहना है कि हमें सबसे ज्यादा परेशानी खाना बनाने में होती है। क्योंकि हम लक्कड़ से खाना बनाते हैं जिससे खाना बनाते समय हमारे हाथ भी जल जाते हैं लेकिन भूख लगने की वजह से मजबूरन हमें खाना बनाना ही पड़ता है। हमारे आस-पास भोजन की कोई दुकान भी नहीं है, जहां से हम कुछ खरीद कर खा सकें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS	Child line Number 1098
CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.	Police Helpline Number 100

कठिन परिस्थितियों से गुजरता है बचपन

बातूनी रिपोर्टर: रिजवान, रिपोर्टर: शम्भू

भ्रमण के दौरान पता चला कि नोएडा की एक बस्ती में जहां बच्चों के माता-पिता कोठियों में कामकाज करने के लिए जाते हैं और कुछ बच्चों के पिता रिक्शा चलाने का काम करते हैं। पत्रकार को भ्रमण करने के दौरान पता चला कि यहां रहने वाले कुछ परिवार बेहद कठिन परस्थिति में रहते हैं। इससे छोटे बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहें हैं, क्योंकि यहां रहने वाले परविार बहुत मुश्किल से अपना गुजारा कर रहे हैं। जिस स्थान पर यह लोग रह रहे हैं, यहां झुग्गियों का किराया देना पड़ता है और आमदनी बहुत कम है। इसलिए माता-पिता को दिन-रात कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। माता-पिता की मेहनत देखकर छोटे बच्चे भी अपने माता-पिता के साथ काम करने के लिए

शामिल हो रहे हैं। 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने बताया कि हमारे माता-पिता जहां काम करने जाते हैं, वह लोग उन्हें समय से उनकी तन्ख्वाह भी नहीं देते हैं। इसलिए घर का खर्चा निकालने में काफी परेशानी हो रही है और हम बच्चों को अपने घर का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ रहा है। हम बच्चों को भी कड़ी मेहनत करनी पड़ रही है। बच्चों का कहना है कि हम सभी बच्चे झुग्गियों के पास ही स्थापित कुछ कंपनियां हैं, जहां कूड़ा-कचरा काफी फैंका जाता है। बच्चे उसी कूड़े-कबाड़े को बीन कर अपने घर ले जाते हैं। उसके बाद कूड़े की छंटाई-बिनाई करके उस कूड़े को बेचकर अपने घरेलू खर्चे के लिए कुछ पैसे निकाल लेते हैं। बात करने के पश्चात बच्चों ने बताया कि जब हम बच्चे कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो हमें कूड़े के ढ़ेर के ऊपर चढ़ना पड़ता है। इस कूडे.के ढेर पर चढ़ना बहुत मुश्किल होता है। हमारे हाथ-पैर में नुकीले प्रकार की धातु घुस जाती है, इसके बाद भी हम ऊपर चढ़ कर कूड़ा बीन कर लाते हैं और उसकी छंटाई-बिनाई करके बेच कर कुछ पैसा कमाते हैं और माता पिता को देते हैं जिससे हमारे घर का खर्चा पूरा होता है।

कूड़ा वाहन की बस्ती में हो सुविधा

बातूनी रिपोर्टर: सोनू व रिपोर्टर: शम्भू

भ्रमण के दौरान एक विशेष बात पता चली कि बंगाल, बिहार से लोग आकर नोएडा में, जो खाली स्थानों को किराए पर लेकर और साफ-सफाई करके झुग्गी बनाते हैं, ताकि वह अपने परिवार के साथ गुजर-बसर कर सकें। जब हमारे पत्रकार ने खुद देखा कि एक जंगल सा मैदान था। उस मैदान की माता-पिता साफ-सफाई कर रहे थे, तभी वहां खेल रहे बच्चों से पूछा कि आपलोगों के माता-पिता इस जंगल की साफ-सफाई क्यों कर रहे हैं? बच्चों ने बताया कि भईया इस स्थान पर हमारे माता-पिता झुग्गी बनाएंगे और हम इसी स्थान पर अपने परिवार के साथ रहेंगे। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपलोगों के माता-पिता इस स्थान पर ही झुग्गी क्यों बना रहे हैं? बच्चों ने बताया कि हमारे माता-

पिता के पास इतना पैसा नहीं है कि वह एक अच्छा मकान किराए पर लेकर रह सकें। बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता गांव से इसलिए आए हैं, ताकि दो पैसे कमा सकें। पत्रकार जब बच्चों से बातचीत कर रहे थे, तभी पत्रकार ने देखा कि जिस स्थान पर झुग्गी बनाने के लिए साफ-सफाई की जा रही है, उसी स्थान के निकट माता-पिता गड्ढा करके मिट्टी निकाल रहे थे। कुछ दिनों के बाद जब वहां झुग्गियां बन गयी थीं, तब वही गड्ढे कुछ इस तरह देखने को मिले कि उन गड्ढों में घरेलू कूड़ा-कचरा डाला हुआ था। बच्चे उसी गड्ढे में मल-मूत्र कर रहे थे, जिसकी वजह से मच्छर काफी पनप रहे थे, जिससे यह संकेत मिल रहे थे कि बच्चे आने वाले समय में डेंगू, मलेरिया का शिकार होने वाले हैं। बच्चों का कहना है कि हम चाहते हैं कि हमारी झुग्गी में नगर निगम की ओर से कोई वाहन भेजा जाए, ताकि हम होने वाली बीमारियों से बचाव कर सकें।

छेड़छाड़ की वजह से छूटा स्कूल

बातूनी रिपोर्टर: गौतमी व रिपोर्टर: पूनम

आगरा शहर से एक खबर आई कि तकरीबन 10 लड़कियों ने स्कूल जाना छोड़ दिया है। ऐसा क्यों हुआ? इसके बारे में आपको यह खबर पढ़ने के बाद पता चलेगा। आखिर क्या ऐसी वजह थी जिसकी वजह से लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ा? इसके विषय में अब हम विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। पता चला कि इनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। इसलिए माता कोठी में काम करती

हैं और पिता बेलदारी व मजदूरी के कार्य करके अपने परिवार का गुजारा कर रहे हैं। माता-पिता ने बहुत मुश्किल से अपने बच्चों का सरकारी स्कूलों में दाखिला करवाया था। खासकर लड़कियों को स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए माता-पिता तैयार नहीं हो रहे थे लेकिन जैसे-तैसे करके माता-पिता तैयार हुए और लड़कियों को स्कूल भेजना शूरू किया, तब रोजाना स्कूल जाने लगे। वर्तमान में एक कठिन समस्या के कारण लड़कियों ने स्कूल जाना बंद कर दिया है। हमें पता चला कि जिस रास्ते से लड़कियां स्कूल जाया करती थीं, उसी रास्ते पर कुछ दुष्ट लड़के नशा करके घूमते रहते थे और स्कूल जा-आ रही लड़कियों को देखकर अश्लील बातें बोलते थे, जिसकी वजह से लड़कियों को बहुत परेशानी होती थी। सुनने में आया कि कई बार दुष्ट लड़कों ने लड़कियों का घर तक पीछा किया, जिसकी वजह से मजबूरन लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ा। लेकिन कुछ समय बाद लड़कियों ने प्राइवेट स्कूल जाना शूरू किया, लेकिन वहां की फीस अधिक होने के कारण स्कूल को त्यान दिया है और घरेलू कामकाज कर रही हैं।

गंदे पानी के भराव से फैल रहीं बीमारियां

रिपोर्टर: संगीता

हमारे यहां पुरनिया में 'कॉन्टेक्ट प्वाईन्ट' की बातूनी रिपोर्टर 10 वर्षीय सबा ने बताया कि हमारी बस्ती में पानी का निकास नहीं हो रहा है। इसके कारण हमारे यहां की नालियां पानी से भर गई हैं और नाली का गंदा पानी बस्तियों के आस-पास के गड्ढों में भी भर गया है। इस पानी में मवेशी आकर बैठ जाते हैं, जिससे बस्ती में और भी ज्यादा गंदगी हो जाती है। पूरी बस्ती में गंदे पानी और कीचड़ की गंदी बदबू आती रहती है। इसी कारण हमारी बस्ती में गंदगी पनप रही है। गंदगी होने के कारण इससे प्रभावित ज्यादातर छोटे बच्चे हो रहे हैं। क्योंकि छोटे बच्चे आसपास खेलते-कूदते हैं और बीमारी का शिकार हो जाते हैं। छोटे बच्चों के अंदर गंदगी से लड़ने की क्षमता कम रहती है। इसलिए बच्चे गंदगी से जल्दी-जल्दी और बार-बार प्रभावित होकर बीमार पड़ रहे हैं। बच्चे की बेहतर सुरक्षा और उनको स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी हम सबकी है। इसलिए बालकनामा के बातूनी पत्रकार यह अपील करते हैं कि इस कोलोनी में जल्द से जल्द साफ-सफाई कराई जाए और बीती में हो रहे गड्ढों का भराव कराके उन्हें पक्का किया जाए तथा नालियों में से पानी का निकास करने की व्यवस्था की जाए, जिससे वहां पानी का भराव न हो सके। इस पानी के भराव होने से ही बस्ती में मच्छरों के साथ-साथ अन्य प्रकार का प्रदूषण भी बढ़ जाता है, जो बच्चो के साथ बड़े लोगों को भी प्रभीवत कर सकता है। पत्रकारों ने पता लगाया है कि इस गंदे पानी की गंदगी से अभी तो ज्यादातर बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

मवेशियों के कटने से बस्ती में फैल रही दुर्गंध

रिपोर्टर: आंचल

पुरनिया रेलवे स्टेशन के किनारे बसी एक बस्ती। अक्सर ऐसा होता रहता है कि आए दिन वहां से निकलने वाली रेलगाड़ियों से मवेशी कटते रहते हैं। मवेशी कटने वाले सुअर भी होते हैं। चिंता का विषय यह है कि जब मवेशी रेलगाड़ी से कट जाते हैं तो न तो कोई जिम्मेदार अधिकारी वहां आता है और ना ही कोई नगर निगम की तरफ से आता है। इससे बचाव करने के लिए कोई भी पहल नहीं की जाती। इस प्रकार दुर्घटना के बाद बहुत दिनों तक मवेशी ऐसे ही पड़ा रहता है, जिसकी वजह से इसकी दुर्गन्ध बस्ती में फैलने लगती है और इस दुर्गन्ध से बड़े और बच्चे, दोनों प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में हम यदि कुछ भी खाने-पीने का प्रयास करते हैं, तो बच्चे इस दुर्गन्ध की वजह से फौरन उल्टी हो जाती है। यह बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है। बच्चे समय-समय पर बीमार पडते रहते हैं। आए दिन यह दुर्गन्ध बस्ती में आती रहती है। इस दुर्गन्ध से बस्ती में रहने वाले बच्चों को सांस लेने में काफी दिक्कत होती है। यदि सांस लेते हैं तो कोई-कोई बच्चा इस दुर्गन्ध की वजह से उल्टी कर देता है। इस दुर्गंध का गलत प्रभाव बच्चों पर हो रहा है।

अभिभावकों की लापरवाही से बच्चे बढे अपराध की ओर

रिपोर्टर: आंचल

पत्रकार ने चारबाग स्टेशन पर दौरा किया। दौरे के दौरान पत्रकार बच्चों के अलग-अलग समूहों से मिला। उन बच्चों से बातचीत करने के बाद पता चला कि दो-चार बच्चे ऐसे हैं, जो नशा करते हैं, जुआ खेलते हैं। इन बच्चों की उम्र लगभग 6 से 8 साल तक की है और इतनी कम उम्र में यह बच्चे इतनी ज्यादा मात्रा में नशा करते हैं। इससे भी बड़ी चैर्का देने वाली बात सामने आई कि यह बच्चे नशे में धुत्त रहने के कारण उनके आसपास आते-जाते अपनी उम्र के बच्चों के साथ वह छेड़छाड़ करते रहते हैं। पत्रकार ने जब

8 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोलू से बात की तब वह बच्चा कुछ नशे में था और वह मानसिक रूप से विक्षिप्त भी था। बात करके पता चला कि उसकी-मम्मी पापा उसका ध्यान नहीं रखते हैं। इसके साथ यह भी बताया कि हमारे यहां सभी लोग जुआ, खेलते रहते हैं। वहां पर सभी नशा करते हैं, पर मेरे माता-पिता मुझपर ध्यान नहीं देते और न ही मुझसे प्यार करते हैं। मुझे क्या चाहिए वह इसे नहीं समझते। इसलिए मैं स्टेशन पर आ जाता हूं। इसी तरह सभी बच्चों ने अपनी-अपनी समस्या बताई। बच्चों का कहना था कि हमारे यहां का वातावरण इसी प्रकार का है, इसलिए हम बच्चे भी देखा-देखी उनकी तरह करना सीख जाते हैं, क्योंकि हमारे माता-पिता भी ऐसे ही हैं। वह भी हमें कभी कुछ नहीं कहते हैं।

शराबी पिता की वजह से बच्चे हुए प्रभावित

रिपोर्टर: संगीता

पुरनिया में संस्था द्वारा चलाए जा रहे शिक्षा केंद्र में बच्चों के साथ पढ़ने वाला एक बालक; जो लगभग 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मानसी है; के पिताजी शराब पीकर घर में लड़ाई-झगड़ा करते हैं। कुछ दिन पहले की बात है कि मानसी की मम्मी-पापा ने आपस में झगड़ा किया। झगड़े से परेशान होकर मानसी की मम्मी अपने आप खुद जाकर आत्महत्या करने के लिए रेल की पटरी पर लेट गई। रेलगाड़ी

आने पर रेलगाड़ी से कट कर उसका निधन हो गया। मानसी के चार भाई-बहन हैं। एक बड़ी बहन की पहले ही शादी हो चुकी थी लेकिन जब से इसकी मम्मी का निधन हुआ है, तब से मानसी बहुत दुखी रहने लगी; क्योंकि अब उसे अपना पेट भरने के लिए काम करना पड़ता है। जब उसकी मां जिंदा थी, तो उसे किसी भी प्रकार का काम नहीं करना पड़ता था। अब मानसी शराब के ठेके पर डिस्पोजल के गिलास बेचने का काम करती है। डिस्पोजल गिलास बेचकर प्रतिदिन कुछ पैसे कमाती है और अपना पेट भरती है। यदि किसी दिन वह डिस्पोजल गिलास बेचने नहीं जा पाती है, तो वह उस दिन भूखे पेट ही सो जाती है।

स्वच्छ वातावरण में रहना चाहते हैं बच्चे

रिपोर्टर: आंचल

बालकनामा की पत्रकार लखनऊ के लवकुश नगर में बच्चों से मिलने गई। वहां उसने देखा कि बच्चों के घरों के आसपास बहुत सारा गोबर पड़ा हुआ था। वहां पानी के निकास की कोई भी व्यवस्था नहीं थी। घरों का कूड़ा भी आसपास फैंका हुआ था। बच्चों से बातचीत करने पर पत्रकार को बच्चों ने बताया कि इनकी बस्ती में दूध की कुछ डेयरियां चलती हैं और लोग अपने-अपने घरों में पशु भी पालते हैं। यहां सभी के अपने-अपने छोटे-छोटे तबेले बने हुए हैं और पशुओं की खाने की व्यवस्था बस्ती में बने तबेलों में ही करते हैं। पशुओं के लिए भूसा इनके अपने-अपने तबेलों में ही रहता है। यह भूसा हवा से उड़कर बस्ती में फैल जाता है और पशुओं का मल-मूत्र बस्ती में ही रहता है जिसका ठीक से निकास नहीं है। यही कारण है बस्ती में गंदगी रहने का। इससे बच्चे प्रभावित हो रहे हैं। क्योंकि बहती हवा में ही बहुत प्रदूषण है। इसके बाद इस गंदगी की वजह से भी प्रदूषण हो रहा है। बच्चों को स्वच्छ वातावरण नहीं मिल पा रहा है। बच्चे

चाहते हैं कि उनको स्वच्छ वातववरण मिले। बस्ती की साफ-सफाई पर ध्यान देने हेतु जिम्मेदार कर्मचारी बस्ती में दौरा कर निर्देश दें, जिससे कि बस्ती में रहने वाले लोग वातावरण को दूषित न करें; ताकि बच्चों को स्वच्छ वातावरण मिल सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

इस तरह का व्यवहार क्यों?

रिपोर्टरः किशन

जब हमारे पत्रकार ने एक बस्ती में दौरा किया, तो पता चला कि बस्ती में रहने वाले लोग मासूम बच्चे के माता-पिता को अपने जाल में फंसाते हैं। जैसे कि माता-पिता को लालच देते हैं कि आपके बच्चे कुछ काम नहीं करते हैं। पूरे दिन इधर-उधर घूमते रहते हैं। इससे आप लोगों को कोई फायदा हो रहा है क्या? अगर आप लोग मेरे पास काम पर लगा दो तो कुछ पैसे भी आ जाएंगे। ऐसा करने से आपके परिवार का खर्चा भी निकलेगा और आपका बच्चा भी कामकाज करना सीख जायेगा। इस तरह से गुमराह करने के बाद माता-पिता भी इन दुष्ट व्यक्ति के झांसे में आ जाते हैं और अपने बच्चों को गलत काम की ओर बढ़ा देते हैं।

चलिए अब जानते हैं कि यह दुष्ट व्यक्ति बच्चों से कौन से काम करवाते हैं। बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि यह दुष्ट व्यक्ति बच्चों को गांजा सप्लाई के कार्य में शामिल करते हैं। बच्चों ने बताया कि यह दुष्ट व्यक्ति हम बच्चों को बोलते है कि तुम अलग-अलग स्थान पर जाओ और गांजा देकर आओ और जब कभी पुलिस छापे मारने के लिए आती है, तो वह दुष्ट व्यक्ति हमारा साथ तक नहीं देते है। पुलिस के पूछने पर बोलते हैं कि हम इन बच्चों को जानते तक नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में जब हमारे माता-पिता इनके पास मदद मांगने के लिए जाते हैं, तो वह दुष्ट व्यक्ति भगा देते हैं और बोलते है कि हम तुम्हें पैसे देते हैं, मुफ़्त में काम नहीं करवाते हैं। अब जो भी परेशानी है, तुमलोग खुद हल करो। ऐसी परिस्थिति में माता-पिता भी कुछ नहीं कर पाते हैं। जैसे-तैसे छूट पाते हैं। माता-पिता को बहला-फुसला कर फिर से बच्चों को अपने चंगुल में फंसाते हैं।

कैसे बचाव करें, इस दुष्ट व्यक्ति से?

रिपोर्टरः पूनम

आगरा से अभी हाल ही में एक ख़बर आयी कि आगरा क्षेत्र में रहने वाले लोग अपने परिवार का गुजारा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, तब जाकर उनके परिवार का खर्चा चल पा रहा है। माता-पिता सुबह-सुबह अपने कामकाज के लिए निकल जाते हैं। कामकाज करके रात को ही अपने घर वापस आते हैं। ऐसी परिस्थिति में इनके छोटे-छोटे मासूम बच्चे अपने घर पर अकेले ही रहते हैं। इसका नाजायज फायदा आस-पास में रहने वाले कुछ दुष्ट व्यक्ति उठा रहे हैं। सुनने में आया है कि आस-पास में रहने वाले दुष्ट व्यक्ति, खसकर लड़कियों को कुछ पैसे का लालच देकर कमरे के अंदर बुलाकर

उन मासूम लड़कियों के साथ अश्लील हरकतें करते हैं और लड़कियों को वे दुष्ट व्यक्ति धमकी देते हैं कि तुमने अगर अपने माता-पिता से इस विषय के बारे में बताया, तो तुम्हें बुहत पीटूंगा और तुम्हारे माता-पिता को बोल दूंगा कि तुम्हारी बेटी किसी और के साथ गलत काम करती है। इससे तुम्हारी और तुम्हारे घर वालों की बदनामी होगी। इस दबाव में लड़कियां मजबूरन किसी से कुछ नहीं कहती हैं। लेकिन जब बालकनामा की पत्रकार इन लड़कियों से मिली तो उन्होंने सारी बात बता दी। लड़कियों का कहना है कि यह सिर्फ हमारे साथ ही नहीं बल्कि कई ऐसी लड़कियां हैं जिनके साथ आयेदिन इस तरह की हरकतें होती हैं। हम चाहते हैं कि इस तरह लड़कियों के साथ गलत व्यवहार करने वाले व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए, ताकि दुबारा किसी लड़की के साथ इस तरह का व्यवहार न हो।

आखिर समाज में रहने वाले ऐसे क्यों देखते है हमें?

रिपोर्टर किशन

बालकनामा के पत्रकार ने पश्चिमी दिल्ली के एक स्थान पर विजिट किया और सड़क व कामकाजी बच्चों से बात किया कि आप को यहां पर रहते समय क्या-क्या परेशानियों का सामना करना पड़ता है? बच्चों ने एक-एक करके बताया कि भईया इस जगह हम ऐसे ही छोटी-छोटी झोपड़ी बनाकर रहते हैं। बंजारों की तरह हमलोग यहां भीख मांगने, बाइपर और सिल-बट्टा बेचने का काम करते हैं लेकिन यहां रह रहे लोग काफी दिनों से दादागीरी दिखाते हैं। बिना किसी गलती के हमसे लड़ाई करते हैं। बिना किसी कसूर के हमें

आयेदिन मारा जाता है। अगर हम कुछ बोल दें तो वो लोग एकजुट होकर मारने आ जाते हैं और यहां के लोग भी हमारा साथ नहीं देते हैं। बच्चों का कहना है कि हमें यह लोग अपने समाज का हिस्सा नहीं मानते और हमारी तरफ की लड़कियों को गलत निगाह से देखते हैं और गालियां भी देते हैं। ऐसी परिस्थिति में हम बच्चों को बहुत बुरा लगता है लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं? यहां रहना व कामकाज करना हमारी मजबूरी है। अगर हम इनकी गाली-गलौज व इनकी बातों पर ध्यान देंगे, तो हमारे परिवार की जिंदगी खतरे में आ सकती है। इसलिए मजबूरन हमें इनके आत्याचार को सहना पड़ रहा है। हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे साथ इस तरह का व्यवहार न हो। साथ ही हमें डर है कि कहीं किसी दिन हम बच्चे इनकी बड़ी वारदात के शिकार न हो जाएं।

कैसे रोका जाए, बच्चों को इस अंधेरी दुनिया में जाने से?

रिपोर्टरः किशन

हमारा पत्रकार एक दिल दहला देने वाली ख़बर लेकर सामने आया है। आपने सुना होगा कि बच्चे सॅलूशन का नशा करते हैं। गुटख, तंबाकू आदि का नशा तो बच्चे कर ही रहे हैं। इस ख़बर में हमारे पत्रकार ने एक विशेष बात का पता लगाया है, जिसके बारे में आप भी जानकर दंग रह जायेंगे। हमारे पत्रकार को पता चला कि कुछ ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने आस-पास के बच्चों को देख्कर नशा करना सीख लिया है। वर्तमान में ठंड भी तेजी से बढ़ रही है, इसलिए बच्चों को अपना शरीर गर्म रख्ने के लिए नशीले पदार्थ की आवश्यकता पड़ रही है। इसलिए जिन बच्चों के पास पैसे न हो पा रहे हैं, वे बच्चे घर में लड़कियां जिस नाख़ून पॉलिश को इस्तेमाल करती हैं, उस नाख़ून पॉलिश को बच्चे अपने नशे के लिए उपयोग करते हैं। अगर घर वाले देख्ते हैं और बच्चों को मारने के लिए दौड़ते हैं, तो बच्चे भाग जाते हैं। दुकान से एक दो रुपए की माचिस की डिब्बियां ख्रीद कर जिस पेपर फॉईल में रोटी लपेट कर रख्ते हैं, उसी पेपर फॉईल पर माचिस का मसाला निकाल कर बच्चे नशा कर रहे हैं। इसकी वजह से इनके शरीर में नशीला पदार्थ बहुतायत में इकट्ठा हो रहा है, जो इनके जीवन के लिए बेहद खतरनाक है। बच्चों को यह नशा करने के बाद होश तक नहीं रहता है। इसलिए आप सभी से निवेदन है कि बच्चों के सामने किसी प्रकार का नशा न करें और कोई व्यक्ति नशा कर भी रहा है, तो उनके ख्लाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करें; ताकि बच्चों का भविष्य नशे जैसी अंधेरी दुनिया में न उलझे।

क्या आप करेंगे, हमारी मदद?

बातूनी रिपोर्टरः सुमीत व रिपोर्टरः पूनम

आगरा से हाल ही में ख्बर आयी कि भूतकाल में बच्चे अपने परिवार के ख्र्च के लिए अलग-अलग दुकानों में काम करते थे; जैसे कि कपडों की दुकान में, राशन की दुकान में। ठंड की वजह से काम मंदा हो गया है जिसकी वजह से काम बिल्कुल नहीं चल रहा है। इसलिए दुकान मालिक भी दुकान में काम कर रहे छोटे-छोटे मासूम बच्चों पर क्रोधित होते हैं। बच्चों का कहना है कि काम मंदा चलने की वजह से हमारा मालिक समय पर पैसे भी नहीं देते हैं। इस वजह से हमारे घर का गुजारा भी नहीं हो पाता है। माता-पिता का व्यवहार भी सही नहीं है। घर में हम बच्चे पैसे भी नहीं दे पा रहे हैं। हमारी परेशानी हमारे माता-पिता भी नहीं समझ पा रहे हैं। माता-पिता को भी लगता है कि हम बच्चे झूठ बोल रहे हैं। इसलिए हम बच्चे दूसरी दुकानों में भी कामकाज की तलाश किये लेकिन अभी कोई भी व्यक्ति काम पर रख्ने के लिए तैयार नहीं हो रहा है। दूसरी बात यह है कि

अगर कोई व्यक्ति काम पर रखते भी हैं तो वह तन्ख्वाह बहुत कम देने की बात करते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि कोई व्यक्ति हम बच्चों की मदद करे, ताकि हम इस परेशानी से निपट सकें और अपने माता-पिता को भी खुश रख सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या ऐसा हो पाएगा?

रिपोर्टर: किशन

नोएडा से अभी हाल ही में ख्बर सामने आयी थी कि नोएडा के कई क्षेत्रों में झुग्गी तोड़ दी गई हैं लेकिन एक क्षेत्र ऐसा है जहां लोग झुग्गी किराए पर लेकर रह रहे हैं। झुग्गी टूटने की वजह से लोग व बच्चे इधर से उधर हो गए हैं। बच्चों के माता-पिता को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा, जब झुग्गी तोड़ी गयी थीं। जैसे-तैसे माता-पिता ने एक स्थान से दूसरा स्थान बदला और अपने परिवार को व्यवस्थित किया है। वर्तमान में जो समस्या सामने है वह यह कि जिस स्थान पर ये लोग रह रहे हैं, उस स्थान पर शौचालय का प्रबंध नहीं है। बच्चे खुले में शौच करने के लिए जाते हैं। इसलिए बच्चों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए कुछ दिनों के बाद बस्ती से थोड़ी दूरी पर चलता-फिरता शौचालय लगाया जा रहा था, तो बच्चों के माता-पिता ने बोला कि रात के समय इस स्थान पर काफी अंधेरा रहता है, इसलिए आप लोग इस शौचालय को बस्ती के साईड में लगा दीजिए लेकिन शौचालय लगाने वाले व्यक्ति ने एक भी नहीं सुनी और बस्ती से दूर शौचालय लगा दिया। बच्चों को रात के समय शौच करने में काफी परेशानी होती है। बच्चों का कहना है कि उस शौचालय को बस्ती के निकट लगा दिया जाए, ताकि हम बच्चों को इस परेशानी से छुटकारा मिल सके।

माता-पिता का साया छूटने के बाद बच्चों की जिंदगी बेहाल

रिपोर्टर: पूनम

यह खबर आगरा शहर के दो मासूम बच्चों की है। वर्तमान में यह बच्चे अपने चाचा-चाची के पास रह रहे हैं। अपनी दुखों की दास्तान बताते हुए इन बच्चों ने कहा कि हमारे माता-पिता की मृत्यु हो गई है। क्योंकि हमारे माता-पिता बीमार थे। उसी बीमारी की चपेट में हमारे माता-पिता आ गए। माता-पिता की मृत्यु होने के बाद बुआ अपने घर ले गईं, लेकिन अपने घर ले जाने के बाद बुआ वहां भी घरेलू कामकाज करवाती थीं और इतना ही नहीं होटल पर मुझे काम पर लगा दी थीं। जब हम कामकाज पर रहते थे, तो मेरा जो छोटा भाई है पांच साल का, उस पर बुआ का बेटा आत्याचार करता था। इतना ही नहीं, एक दिन मुझे बुखार आ गया तो मैं घर का कामकाज नहीं कर पाई, तो बुआ ने बहुत बुरी तरह से मारा और बोल रही थी कि बुखार कुछ नहीं होता है, यह सब तुम्हारा ड्रामा है। इस आत्याचार को देखकर चाचा-चाची अपने घर लेकर आए। दुख की बात यह है कि चाचा-चाची भी कुछ दिन तक ठीक रहे और कुछ ही दिनों के बाद चाचा-चाची भी इसी तरह से व्यवहार करने लगे हैं। अब हमें समझ नहीं आ रहा है कि हम भाई-बहन कहां जाएं? हम भाई-बहन को सही समय पर खाना भी नहीं मिल पा रहा है। हम चाहते हैं कि कोई हमारी मदद करें, ताकि हम भाई-बहन की जिंदगी संवर सके।

किसी दूसरे की सजा हमें क्यों?

रिपोर्टर: किशन

हमारा पत्रकार बच्चों के साथ सर्पोट ग्रुप मींटिग किया। इस दौरान मीटिंग में उपस्थित सभी बच्चों ने अपनी परेशानियों के बारे में बताते हुए कहा कि राजधानी दिल्ली में आतंक दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। इसकी चपेट में सड़क पर रहने वाले मासूम बच्चे या उस क्षेत्र में कामकाज कर रहे मासूम बच्चे आते हैं। इस मीटिंग में उपस्थित एक बालक ने बताया कि भईया जब हम बच्चे कामकाज करने के लिए जाते हैं, तो हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। कुछ लोग खसकर भीड़भाड़ वाले स्थानों पर घूमते रहते हैं और हम बच्चे भी उसी स्थान के आस-पास सामान बेचते हैं। चोरी वह लोग करते हैं, दुभार्ग्यवश उस स्थान पर उपस्थित लोग हम बच्चों पर शक करते हैं। सुनने में आया है कि उन लोगों का एक समूह बना हुआ है। आयेदिन वह लोग ऐसे काम करते हैं। वह लोग भीड़भाड़ वाली

बस में चढ़कर लोगों की जेबें भी काटते हैं। जो लोग बाजार में ख्रीदारी करने के लिए आते हैं, उनके साथ भी यह लोग यही करते हैं। अगर कोई व्यक्ति इन लोगों का पीछा करता है, तो उन्हें ब्लेड व नुकीली चीजों से प्रहार करते हैं, जिसकी वजह से कामकाजी बच्चे परेशान हैं। बच्चे चाहते हैं कि इस तरह का व्यहार करने वाले लोगों के साथ सख्त कार्यवाही की जाए, ताकि इन लोगों की वजह से सड़क एवं कामकाजी बच्चे बदनाम न हों।

जैसा बच्चे चाहते हैं, क्या वैसा हो पाएगा?

रिपोर्टर: दीपक

बालकनामा के पत्रकार ने पश्चिमी दिल्ली में विजिट किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ एक मींटिग किया। बच्चों से उनकी परेशानी के ऊपर चर्चा की तो बच्चों ने बताया कि भईया हमारी झुग्गी के पास में एक पार्क है, वह पार्क काफी बड़ा है। उस पार्क में हम बच्चे अच्छे से खेल पाते हैं और हम काफी खुश भी हैं। धीरे-धीरे अब हमसे यह खुशी छीनी जा रही है। वजह यह है कि जो बड़े लोग हैं, वह लोग उस पार्क में आकर खुलेआम अश्लील हरकतें करते हैं। यह बहुत ज्यादा बढ़ता जा रहा है। इसी वजह से हम बच्चे इस बात से काफी परेशान हो रहे हैं। यह देख कर हम बच्चों पर भी गलत असर हो रहा है। बच्चे यह चाहते हैं कि उस पार्क में एक देखरेख करने वाला रहने लगे, जो उन लोगों को इस तरह से हरकतें

करने से रोक सके। इन लोगों की हरकतों को देखकर बच्चों पर काफी गलत प्रभाव पर रहा है। आस-पास कोई अन्य पार्क न होने की वजह से मजबूरन हम बच्चे इसी पार्क में खेलने के लिए आते हैं। बच्चों का कहना है कि हमें भय है कि कहीं इन लोगों की वजह से बच्चे भी उन हरकतों में लिप्त न हो जाएं। इसलिए अगर इन पर अभी रोक-टोक की जाएगी तो बच्चे गलत दिशा में जाने से बच जाएंगे।

कम पैसे देकर ठेकेदार उठा रहे बच्चों का नाजायज फायदा

बातूनी रिपोर्टर: जावेद व रिपोर्टर: पूनम

आगरा शहर से एक खबर सामने आयी कि छोटे-छोटे मासूम बच्चे कई प्रकार के काम करते हैं; जैसे कि ईंट बनाना या पीपल के पत्ते की शगुन माला बनाना। इस काम में बच्चे तेजी से बढ़ रहे हैं। बच्चों के माता-पिता का कहना है कि हम सुबह कोठी में काम करने के लिए चले जाते हैं, जिसकी वजह से हमारे बच्चे घर पर अकेले ही रहते हैं। इसलिए हम अपने बच्चों को काम पर जाने से मना नहीं करते हैं, ताकि बाहर इधर-उधर भटकने की बजाय एक स्थान पर बैठकर कामकाज कर रहे होते हैं। बच्चों से पता चला कि कुछ बच्चों के माता-पिता जंगल से पीपल की पत्तियां तोड़कर ला देते हैं और कुछ बच्चे खुद जंगल जाकर पीपल के पत्ते तोड़कर लाते हैं, शगुन माला बनाना शूरू करते हैं। बच्चों ने हमें बताया कि 12 शगुन माला बनाने पर हमें 1 रुपया मिलता है। इस वजह से हम बच्चों को रात-दिन करके बहुत सारी मालाएं बनानी पड़ती हैं, ताकि अधिक पैसे की आमदनी हो सके।

बच्चों का कहना है कि माला बनाते समय कभी-कभी हमारी उंगलियों में भी सुई चुभ जाती है जिसकी वजह से हम बच्चों के हाथ में बहुत दर्द होता हैं कुछ बच्चे ऐसे हैं जो ठेकेदार के अंदर काम करते हैं। वह ठेकेदार बच्चों से काम इसलिए करवाता है, ताकि उन्हें अधिक पैसे न देना पड़े। ठेकेदार इन मालाओं को अधिक मूल्य में लोगों को बेचता है। इस वजह से बच्चे बहुत परेशान हैं। बच्चे चाहते हैं कि उन्हें उचित मूल्य मिले, ताकि बच्चों के परिवार का गुजारा असानी से हो सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बालकनामा के पत्रकार से मिलीं डॉ. प्रीती वर्मा जी

रिपोर्टर: आंचल

डॉ. प्रीती वर्मा जी, बालकनामा की लिखावट (लेखक), रिपोर्टर आंचल से मिलीं। उनके बारे में जाना कि वह किस प्रकार अपने अखबार को चलाते हैं। जब रिपोर्टर ने अपने बारे में बताया कि भूतकाल में जब वह तमाम विषम परिस्थितियों से जूझ रही थीं, तो एक दिन अचानक बालकनामा के पत्रकार से मुलाकात हुई। उन्होंने हमारा हर संभव सहयोग किया। बालकमाना तथा स्वयंसेवी संस्था के सहयोग से उनकी जिंदगी में बदलाब आए और आज इस भूमिका में हैं। आज मैं जो कुछ हूं, उनकी बदौलत ही हूं। यह सुनकर डॉ. प्रीती वर्मा जी अधिक प्रसन्न हुईं। उन्होंने अपने बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि मैं राज्य बाल आयोग, उत्तर प्रदेश में बच्चों के लिए उचित कार्य करती हूं। और मुझे बालकनामा पत्रकार आंचल से मिलकर और उनके बारे में विस्तार से जानकर बहुत खुशी मिली। उन्होंने सभी बच्चों को आगे बढ़ने के लिए ढेर सारी शुभकानाएं दीं। उनके उज्जवल जीवन में वह काम आ सकें, ऐसी उन्होंने कामना की। आंचल को बधाई देते हुए कहा कि आंचल अपनी तरह दूसरे बच्चों को भी पढ़ाई की ओर आकर्षित करें। ज्यादा से ज्यादा बच्चों को जानकरी दें, ताकि वह भी बालकनामा से जुड़ कर अपना जीवन कामयाब कर सकें।

बच्चे हैं असुरक्षित

रिपोर्टर: ज्योति

जब रिपोर्टर ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की तो पता चला कि जो बच्चे लाजपत नगर में कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, वह बच्चे काम करने के बाद वहीं पार्क में सो जाते हैं। पत्रकार के पूछने पर बच्चों ने बताया कि जहां पर बच्चे रहते हैं, वहां पर पार्क है। उस पार्क को लोग किन्नर पार्क के नाम से जानते हैं। इसी नाम से इस पार्क को जाना जाता है। इस पार्क के अंदर बहुत सी झुग्गी-झोपड़ियां बनी हुई हैं। जहां यह बच्चे रहते हैं, पर यहां खतरे वाली बात यह है कि यहां दिन पर दिन लड़कियों के साथ छेड़छाड़ और यौन शोषण की समस्या बढ़ती ही जा रही है। लोग बच्चों के साथ गलत काम करते हैं। इस बारे में माता-पिता को बताने से भी कोई फायदा नहीं हुआ। उन्होंने भी हमारी परेशानी को नहीं समझा। कुछ बच्चों के माता-पिता ने इस बात पर ध्यान दिया और इसकी शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने उन्हें कार्यवाही की और उन्हें बंद किया, लेकिन इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि यह दुष्ट लोग अगले दिन पैसे देकर छूट जाते हैं और फिर से यह लोग लड़कियों को परेशान करना शुरू कर देते हैं। इसलिए कुछ लड़कियां काम करने के बाद उसी मार्किट में ही सो जाती हैं, जहां वह काम करने के लिए जाती हैं। लेकिन यहां भी जानने वाले लोग इन्हें गंदी बातें बोलते हैं कि तुम्हारे साथ कुछ गलत हरकत हुई है। किन्नर पार्क में इसलिए तुम अपने घर नहीं जाती हो। इस तरह हमारी बदनामी करते हैं।

पर हम बच्चों के साथ इस तरह की हरकत न हो इससे बचने के लिए हम मार्किट में ही सो जाते हैं, पर लोग हमें ताना देते हैं, हमें किसी भी तरह रहने नहीं देते हैं। अब हम बच्चे अपनी सुरक्षा कैसे करं? हमारे माता-पिता तो शराब का सेवन कर नशे में होते हैं और हम काम करने के बाद घर लौटते हैं तो हमें सिर्फ यहीं चिंता सताती रहती है कि कहीं हमारे साथ कोई दुर्घटना न हो जाए।

माता-पिता के दबाव में मजबूरी में मासूम लड़कियों को करनी पड़ रही फेरी

बातूनी रिपोर्टर: काजल व रिपोर्टर: दीपक

पश्चिमी दिल्ली से चौंका देने वाली खबर सामने आई कि शादी में कोई बाधा न आए, इसलिए माता-पिता लड़कियों को इस प्रकार के काम सीखने के लिए मजबूर कर रहे हैं। आईए इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। जब हमारा पत्रकार इस स्थान पर बच्चों के साथ बातचीत किया, तो बच्चों ने बताया कि हमारे परिवार गुजरात के रहने वाले हैं। गुजरात में रहने वाले सभी लोग फेरी के काम करते हैं। फेरी का हमारी जाति में काफी महत्व है।

यह बात खासकर लड़कियों के लिए महत्व की होती है; क्योंकि अगर फेरी करने का काम लड़कियां पहले से नहीं सीख रखी होती हैं, तो उन लड़कियों की शादी होने में कई बाधाएं आती हैं; यदि किसी प्रकार से लड़कियों की शादी हो भी गई, तो फेरी करने का हुनर नहीं है, तो शादी होने के बाद भी तलाक हो जाती है। इसलिए माता-पिता इस विषय को लेकर काफी चिंतित रहते हैं और लड़कियों को फेरी करने के लिए भेजते हैं। लेकिन लड़कियों को यह काम पसंद नहीं है। लड़कियों का कहना है कि हमें सुबह आठ बजे घर से निकलना पड़ता है और बहुत दूर-दूर तक सड़ी धूप में फेरी लगानी पड़ती है। इसके साथ एक कारण और भी है कि हमें कुछ लड़के गंदी नजर से देखते हैं, साथ ही कुछ अपशब्द भी बोलते हैं। हम लड़कियों का कहना है कि हमें जल्द से जल्द इन पुरानी रीति-रिवाजों से मुक्ति दिलाएं, ताकि हम लड़कियां कुशलपूर्वक अपना जीवन बिता सकें।

नन्हें कन्धों पर घर की जिम्मेदारी

पृष्ठ 1 का शेष

दुकान लगाकर वह सब्जी बेचता है। इस तरह वह जो भी पैसे कमाता है, वह पेसे अपनी मम्मी को देता है, जिससे उनका पालन-पोषण होता है। जब पत्रकार आंचल, किशन से मिली तो उसने किशन से बातचीत की और पूछा कि आप पढ़ने क्यों नहीं जाते हो? तो किशन ने बताया कि वह पढ़ना तो चाहता है, पर उसे अपने घर की गुजर-बसर करने के लिए काम करना पड़ता है और रोज दुकान लगानी पड़ती है, तब जाकर उसके घर का खर्चा चल पाता है। इसके साथ ही किशन का यह भी कहना है कि यदि काम के साथ-साथ समय मिलने पर यदि पढ़ाई की व्यवस्था हो जाए, तो वह पढ़ाई करने की इच्छा भी रखता है।

काम के अड्डे पर भी नहीं चूकते दुष्टकर्मी

रिपोर्टर: ज्योति

पत्रकारों ने जब बच्चों के बीच सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की तो पता चला कि यहां पर जो बच्चे हैं, वह अलग-अलग प्रकार का काम करते हैं। कुछ बच्चे कोठियों में काम करने जाते हैं, तो कुछ टब-बाल्टी लेकर गली-गली कूंचे-कूंचे घूम-घूम कर कपड़ों के बदले में अपनी टब-बाल्टी बेचने का काम करते हैं। उसके बाद वह बच्चे टब-बाल्टी बेचकर कमाए गए कपड़ों को इकट्ठा कर बाजार में बेचने के लिए जाते हैं। बच्चे कपड़ों के बाजार में दुकान लगाने अलग-अलग जगहों पर जाते हैं जैसे इतवार बाजार, मंगल बाजार, बुध बाजार इत्यादि। इन बाजारों में जाकर यह बच्चे अपना अलग-अलग प्रकार का सामान व कपड़े बेचते हैं। इस काम को सबसे ज्यादा लड़कियां करती हैं। दुर्भाग्य वाली बात यह है कि जो लड़कियां मार्किटों में काम करने जाती हैं, उनके साथ लोग छेड़छाड़ करते हैं। लोग जब उनसे सामान खरीदते हैं तो वह उन्हें पैसे देने के दौरान उन लड़कियों का हाथ पकड़कर उन्हें

अशलील बातें बोलते हैं। यदि यह लड़कियां इस पर आवाज उठाती हैं, तो वह उनके साथ गाली-गलौज करते हैं और उनको मारने की धमकी देते हैं। इसी वजह से यह उन लोगों से कुछ नहीं कह पाती हैं। इन्हें डर रहता है कि कहीं घर जाते समय वह दुष्ट लोग इनके साथ कोई घटना न कर दें। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुमन ने बताया कि इस तरह की हरकत यह दुष्ट लोग हमारे साथ रोज करते हैं और हमारे साथ अशलीलता से पेश आते हैं। इस रोज-रोज की हरकत से हम सभी काम करने वाली लड़कियां परेशान हैं। इस बारे में जब हम अपने माता-पिता से बताते हैं, तो हमारे माता-पिता भी इस पर ध्यान नहीं देते हैं। उनका कहना होता है कि हमेशा आप होने वाली छेड़छाड़ पर ध्यान न दें और ना किसी व्यक्ति से कहें; क्योंकि हमें मार्किट में ही जाकर उसी जगह काम करना है, अगर हमने किसी प्रकार की शिकायत की, तो हमारा मार्किट में दुकान लगाना मना हो सकता है। हमें लोग दुकान भी नहीं लगाने देंगे। इससे हमारी रोजी-रोटी खतरे में पड़ सकती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूल जाने वाले बच्चों को किया जा रहा है परेशान

रिपोर्टर: ज्योति

जब बालकनामा के पत्रकार ने पूर्वी दिल्ली के एक क्षेत्र में दौरा किया और वहां रहने वाले बच्चों से बातचीत की तो वहां स्कूल जाने वाले बच्चों ने बताया कि जब हम स्कूल जाते हैं तो कुछ लोग शराब पीकर नशे में धुत्त होकर गलियों में खड़े रहते हैं। वह लोग हम बच्चों को स्कूल जाते समय परेशान करते हैं। वह लोग जब भी हमें स्कूल जाते देखते हैं तो गंदी-गंदी गालियां देते हैं। और तो और, वह हमें बुलाकर नशा करने के लिए हमसे गुटखा, तम्बाकू एवं बीड़ी दुकान से मंगवाते हैं। मना करने पर वह हमें मारते हैं। जब हम बच्चे इस बारे में अपने माता-पिता से बताते हैं तो हमारे माता-पिता हमारी समस्या सुनने के बाद उनके पास जाते हैं, तो वह लोग हमारे माता-पिता को देखकर दूर से ही भाग जाते हैं। जब हम स्कूल से वापस घर आते हैं तो हमें इसी बात का भय सताता रहता है कि हमने अपने माता-पिता से जिन लोगों के बारे में शिकायत की है, अगर वह लोग हमें रास्ते में मिल गए तो हम उनसे कैसे बचेंगे? वह हमारे साथ ज्यादा मारपीट कर सकते हैं। यह भय हमें स्कूल आते-जाते सताता रहता है। इसी कारण से कुछ बच्चों ने स्कूल जाना भी कम कर दिया है; क्योंकि यह लोग कभी भी रास्ते में बच्चों को स्कूल जाते समय मिलते हैं, तो वह बच्चों को इसी प्रकार परेशान करते हैं।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

आप भी मना सकते है सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ अपना जन्म दिवस

सड़क एवं काकमाकजी बच्चों ने मनाया मैरी क्रिस्मस एक दूसरे को दी बधाई।

बाल आयोग की सदस्य के द्वारा गर्म कपड़े किए गए वितरण बच्चो ने जताई खुशी।

लखनऊ में चार दिवसीय कार्यशाला में बच्चों ने मन लगाकर नेतृत्व के गुण सीखे।

जर्मन बाल दूतावास, नई दिल्ली में उत्सव का हिस्सा बनने के लिए बालकनामा टीम को विशेष निमंत्रण।

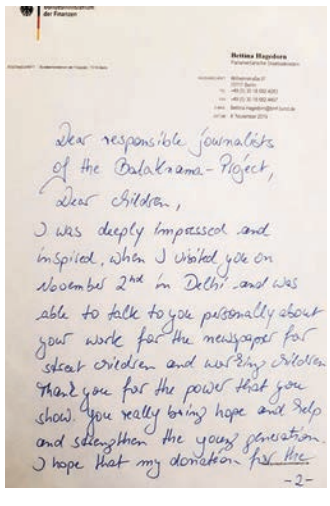

Dear responsible journalists
of the Balaknama-Project,
Dear children,
I was deeply impressed and
inspired, when I visited you on
November 2nd in Delhi and was
able to talk to you personally about
your work for the newspaper for
street children and working children.
Thank you for the power that you
show. You really bring hope and help
and strengthen the young generation.
I hope that my donation for the
-2-

श्री गुन्नार जॉन, मंत्री वित मामलों, जर्मन दूतावास नर्द दिल्ली ने दौरा किया और बालकनामा टीम के लिए सुश्री बेटिना हिंडोर्न का सराहना पत्र सौंपा।।

बढ़ते कदम सदस्यो की बनी दोस्त गुरूग्राम की पुलिस, बच्चो से की गरूग्राम पुलिस ने सीधी बातचीत ।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471